

حکم السحر والكهانة

مذہب اور

کھانہ کی حیثیت

سماہت اش-شہب عبدالعزیز بن عبداللہ بن ہاشم (ر.ا.)



Islamic Information Centre-Kutch

حراستِ توحيد

હિરાસતે તોહીદ

حكم السحر والكهانة

જાદૂ ઓર કહાનત કી હૈસિયાત

તાલીફ

સમાહતુશ્-શૈખ

અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ (રહ.)

(સાબિક મુફ્તીએ આ'ઝમ, સઉદી અરબ)

ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ જમાલ પટીવાલા

— શાએકદા —



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ કે પાસ, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મોબાઈલ : (+91) 8401 7861 72 Blog : www.iickutch.blogspot.in

Jadu aur Kahanat ki Hesiya (Gujarati Lipiyantar)
By : Samahat As-Shaikh Abdul Aziz Bin Abdullah Bin Baaz
Gujarati Lipiyantar : Muhammad Jamal Patiwala

–: Publisher :–

ISLAMIC INFORMATION CENTRE-KUTCH
Near Hotel Noorani, Danda Bazar, BHUJ (Kutch)
Mobile : 8401786172,
Blog : www.iickutch.blogspot.in

પ્રથમ આવૃત્તિ
પ્રત : ૧૦૦૦
નવેમ્બર, ૨૦૧૭

પૃષ્ઠ : ૧૬

મુદ્રક : યુનિક ઓફસેટ, અહમદાબાદ

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، وبعد.

अल्लहुमुल्लिस्सलामि वल्लहू, अस्सलातु वस्सलामु अला मिनन्-नबियि
बअदह व बअद.

दौरे हाज़ीर में जाणझूंक करनेवाले कसरत से पाये जाते हैं, जो तिब का दवा करते हैं और ज़हू और कडानत के जरिये बीमारीयों का इलाज करते हैं. ये लोग बाज़ मुमाविक में झैले हुवे है, और ज़हिल और सादा-लोह अवाम को धोका देते हैं. इन हालात के पेशेनज़र अल्लाह ओर उसके बंदो की भैरपवाही के लिये मैंने याहा के इस्लाम और मुसलमानों को इस तरीकअे-कार से जो अजीम ખतरा ला-हक है उसे बयान कर दूं के इस में गैरुल्लाह से ता'ल्लुक और अल्लाह व रसूल के हुकम की मुખालिफ़त है.

युनांये अल्लाह त्आला से मदद याहते हुवे मैं कहता हूं के बीमारी का इलाज मुत्तफ़का तौर पर ज़ाईज है. मुसलमानों को याहिये के वो बातनी अमराज या सर्जरी और अ'साबी अमराज वगैरह के माहिर डोकटरो के पास जाकर अपने अमराज की तशभीस कराअें, ताके वो इल्मे-तिब के मुताबिक मुनासिब और शरई तौर पर ज़ाईज दवा से उसका इलाज करें, क्यूं के ये ज़रूरी अस्बाब हैं, जिनका सखारा लेना अल्लाह पर तवक्कुल के मनाही नहीं. बेशक अल्लाह त्आला ने बीमारी पैदा की है और उसके साथ उसकी दवा भी बनाई है, जिसे जाननेवाले जानते है और ना जाननेवाले नहीं जानते हैं. लेकिन अल्लाह सुब्हानहू व त्आला ने उस चीज़ में अपने बंदों के लिये शिफ़ा नहीं रખी है, जिसे उनके उपर हराम किया है. लिहाज़ा मरीज़ के लिये ज़ाईज नहीं के वो अपनी बीमारी दरयाफ़्त करने के लिये उन काहिनों के पास जाअे, जो पोशीदा चीज़ों की मआरिफ़त का दवा करते हैं. नीज़ ये भी ज़ाईज नहीं के उनकी बतलाई हुई बात की तस्दीक करे, क्यूं के वो

अटकलपध्दु हांकते हैं और जिनातों को हाजिर करते हैं, ताके वो अपने मकसद में उनसे मदद हासिल करें.

ईनका मुआमला कुफ़ व ज़लालत पर मबनी है, क्यूं के ये ईल्मे-गैब का दावा करते हैं. ईमाम मुस्लिम رحمته الله ने अपनी सहीह में रिवायत किया है के नबी करीम ﷺ ने इरमाया :

“जो शप्स किसी नजूमी के पास आया ओर उससे किसी चीज़ के बारे में दरयाइत किया, तो यालीस रात तक उसकी नमाज़ कुबूल नहीं होगी.”

और उजरत अबू डुरैरह رضي الله عنه ने नबी करीम ﷺ से रिवायत किया है, आपने इरमाया :

“जो शप्स किसी काहिन (गैब के दावेदार) के पास आया और उसकी बात की तस्दीक की, तो उसने मुहम्मद ﷺ पर उतारी डुई शरीअत का ईन्कार किया.”

और हाकिम ने दर्जे ज़ेल अल्फ़ाज़ के साथ सहीह कहा है :

“जो शप्स किसी नजूमी या काहिन के पास आया और उसकी बात की तस्दीक की, तो उसने मुहम्मद ﷺ पर उतारी गई शरीअत का ईन्कार किया.”

और उमर बिन डुसैन से रिवायत है के आप ﷺ ने इरमाया :

“वो शप्स हम में से नहीं, जो बदइाली करे या जिस के लिये बदइाली की जाअे, या जो गैब की बातें बतलाअे, या जिसे गैब की बातें बतलाई जाअे, या जो जादू करे, या जिसके लिये जादू किया जाअे, और जो शप्स काहिन के पास आया और उसकी बात की तस्दीक की, तो उसने मुहम्मद ﷺ पर नाज़िलशुदा शरीअत का ईन्कार किया.” (ईसे बज़्ज़ार ने जय्यिद सनद से रिवायत किया है.)

ईन अहादीसे शरीफ़ा में नजूमीयों, काहिनों और जादूगरों वगैरह के पास जाने, उनसे हालात तलब करने और उनके जवाब की तस्दीक करने की मुमानिअत और वईद है. लिहाज़ा अहकाम और दीनी मा'लूमात की तइतीश करनेवालों और उनके ईलावा जिन्हें भी ईन्नियारात व ईक्तदारात हासिल हों,

उन पर वाजिब है के कालिनों और नजूमीयों के पास आने से लोगों को रोके, और बाजारों वगैरह में मशगला करनेवालों को सप्ती से मना करें.

एन नजूमीयों की बाज् बातों के सहीह डो जाने और उनके पास आनेवालों की कसरत से धोका नहीं जाना याहिये, क्यूं के जो उनके पास आते हैं वो पुष्ता आलिम नहीं होते, बल्के वो एस बात को भी नहीं जानते के उनके पास आना मना है, क्यूं के शरीअत की अजीम मुष्तालिफ्त, बडे षतरात और जरर-रसां नताएज के पेशेनजर अल्लाह के रसूल ﷺ ने लोगों को कालिनों वगैरह के पास आने से रोका है. नीज ये जूटे और फ़ाजिर है, जैसा के मजकूरा बाला अहादीस कालिनों और ज़दूगरों के कुफ़ पर दलील हैं, एस लिये के ये एल्मे-गैब का दावा करते हैं, जो कुफ़ है, और एस लिये भी के ये लोग अपना मकसद हासिल करने के लिये जिन्नातों की षिदमत लेते हैं, और अल्लाह त्आला के एलावा वो एन जिन्नातों की एबादत करते हैं, जो अल्लाह त्आला के साथ शिर्क और कुफ़ है. नीज एल्मे-गैब का अकीदा रबनेवाले और उनके एस दावा की तस्दीक करनेवाले दोनों बराबर हैं, और हर वो शप्स, जिसने ज़दूगरी और नजूमियत वगैरह एन पैशावरों से सीष्पी अल्लाह के रसूल उससे बरीउज़्-ज़िम्मा हैं.

किसी मुसलमान के लिये ज़ाएज नहीं के एनके बतलाये हुवे तरीकअे-एलाज की पैरवी करे, मसलन् ज़दूए सकीरें षींयना और कलए उतारना वगैरह षुराफ़ात पर अमल ना करें, जैसे ये लोग करते हैं, क्यूं के ये सब कालिनों की फ़ितरत और इरेबकारी की बातें हैं. जो शप्स एन खीजों पर रज़ामंद हुवा वो उनके कुफ़ व ज़लालत पर मुआविन साबित होगा. किसी मुसलमान के लिये ज़ाएज नहीं के वो कालिनों के पास जाकर उनसे उस शप्स के बारे में सवाल करे जिसके बेटे या करीबी रिश्तेदार से शादी करना याहता है, या शौहर व बीवी, या उनके जानदान के दरमियान डोनेवाली मुहब्बत व वफ़ा या अदावत व एष्पिलाफ़ात के बारे में दरयाफ़्त करे, क्यूं के ये सब गैब की बातें हैं, जिन्हें अल्लाह त्आला के एलावा कोई नहीं जानता.

ज़दूगरी मुहर्मात कुफ़िया में से है, जैसा के अल्लाह त्आला ने सूर:

अकरह में दो इरिशतों - हाइत व माइत - के बारे में ठिक इरमाया है :

وَمَا يُعَلِّمِنِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۖ وَمَا هُمْ
بِضَّآرِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ ۖ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَقٍ ۗ
وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

“और वो दोनों किसी को ज़ादू सिखाने से पड़ेले बता दिया करते थे के हम तो सिर्फ़ आजमाईश के तौर पर भेजे गये हैं, इस लिये कुफ़ ना करो, इर भी लोग उन दोनों से वो कुछ सीखते थे, जिसके जरिये आदमी और उसकी बीवी के दरमियान तफ़रीक पैदा करते थे, और वो इस (ज़ादू) के जरिये बगैर अल्लाह की मशियत के किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकते थे, और लोग उनसे वो चीज़ सीखते थे जो उनके लिये नुकसानदेह थी, और नफ़अ ना पहुंचा सकती थी, हालां के वो जानते थे के जो कोई ज़ादू को इश्रियार करेगा, उसके लिये आभिरत में कोई हिस्सा नहीं होगा, और बहुत ही बूरी शय थी, जिसके बदले इन्होंने अपने आप को बेय डाला. काश ! वो इस बात को समझते.” (सूर: अकरह, २:१०२)

ये आयत दलालत करती है के ज़ादूगरी कुफ़ है, और ज़ादूगर शौहर और बीवी के दरमियान जुदाई पैदा करते हैं. नीज़ इस बात पर भी दलालत करती है के ज़ादू बजाते भूद नफ़अ व नुकसान में असरअंदाज़ नहीं होता, बल्के अक अकले अल्लाह त्आला की नुकसान व नफ़अ पहुंचाने की मशियत ही असर करती है, क्यूं के अल्लाह त्आला ही ने भैर व शर को पैदा किया है, ओर इन ज़ादूगरों को नुकसान ज़रूर और खतरात सभत है, जिन्होंने इन उलूम को मुश्रिकीन से विरसे में लिया है और जईकुल अकल अवाम को धोका देते हैं :
(فَاكْفُرُوا بِاللَّهِ وَآيَاتِهِ إِذْ جَعَلُونَ حَسْبُنَا اللَّهُ وَرِغْمَ الْوَكِيلِ)

जैसा के आयते-करीमा इस बात पर दलालत करती है के जो लोग ज़ादू सीखते हैं वो जैसे काम सीखते हैं जो इन्हें जरूर

पहुंचाते हैं, नफ़ा नहीं पहुंचाते. नीज़ अल्लाह त्आला के यहां धन लोगों के लिये कोई भैर व इजल नहीं है, ये ज़बरदस्त वर्ध है, जो दुनिया व आभिरत दोनों जगल उनके लिये फुसरान और हलाकत पर दलावत करती है, और ये के उन्होंने अपनी जानों को घटिया कीमतों के अवज बेय डाला है, इस लिये अल्लाह ने अपने इस इरमान में इस तिज़ारत की मज़म्मत की है :

وَلَيْتَسَّ مَا شَرَوْا بِهٖ اَنْفُسَهُمْ ۗ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾

“और बहुत ही बूरी शय् थी, जिस के बदले उन्होंने अपने आप को बेय डाला. काश ! वो इस बात को समझते.” (सूर: अकरल, २:१०२)

हम धन ज़ादूगरों, कालिनों और बाकी तमाम दूसरे ज़ाण्डूक करनेवालों के शर से अल्लाह त्आला से आइयत व सलामती तलब करते हैं. नीज़ सवाल करते हैं के अल्लाह त्आला तमाम मुसलमानों को उनके शर से मलडूज़ रभे और उनसे दूर रहने ओर उनके बारे में हुकम धलाडी नाइज करने की तौफ़ीक दे, ताके अल्लाह के बंदे उनके ज़रर और आ'माले ખબीसा से निज़ात पायें. बेशक, अल्लाह बडा इयाज़ और सभावत करनेवाला है.

युनांये अल्लाह त्आला ने अपनी रहमत व अहसान और धत्मा मे ने'मत के तौर पर बंदों के लिये अैसे वज़ाईफ़ मशरूअ किये हैं, जिनके ज़रिये वो ज़ादू लगने से पेहले ही उसके शर से मलडूज़ रह सकें, और ज़ादू लग जाने के बाद भी धन आ'माल से उसका धलाज कर सकें. युनांये आधन्दल सुतूर में उन शरध और मुबाल वज़ाईफ़ का जिक आ रहा है, जिनके ज़रिये ज़ादू के ખतरात से बया ज़ा सकता है और इसका धलाज भी किया ज़ा सकता है.

पेहली किस्म: याअनी ज़ादू के ખतरात से बयने के लिये जो तरीके हैं उनमें से नफ़ाबक्ष और अहम तरीका ये है के शरध अज़कार, मासूर दुआओं और सुर: मुअव्वज़ात के ज़रिये अपने आप को मलडूज़ रभा ज़ाये, इसके लिये मुफ़लिफ़ अज़कार व दुआओं है :

(१) — हर इर्ज़ नमाज़ से सलाम इरने और मशरूअ वज़ाईफ़ बजा लाने

के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ें.

(२) — सोने के वक्त आयतुल कुर्सी पढ़ें, आयतुल कुर्सी कुरआन की सब से अजीम आयत है और वो ये है :

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ
إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ
حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

अल्लाहु ला ईलाह ईल्ला हु, अल हय्युल कयूम, ला तअभुजुहु सिनतुं-
व-ला नल्म, लहु मा ईस्-समावाति व मा ईल्-अर्द, मन्-जल्लजी यश्इउ ईन्दहु
ईल्ला बि-ईज़्निह, यअल्मु मा बईन अईदीहिम् व-मा जल्हुम, व-ला
युहीतून बि-शयईम् मिन् ईल्मिही ईल्ला बि-मा शा-अ, व-सिअ कुरसिय्युहुस्-
समावाति वल्-अर्द, व-ला यउद्दुहु डिइज़ुहुमा, व-हुव अलिय्युल् अजीम.

“अल्लाह के ईलावा कोई मा'बूद नहीं, वो हमेशा से ज़िंदा है और
तमाम कायनात की तदबीर करनेवाला है, उसे न ठिंघ आती है और ना निंद.
आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी की मिलिकियत है. कौन है जो उसकी
जानिब में बगैर उसकी ईजाजत के किसी के लिये शफ़ाअत करे. वो तमाम वो कुछ
जानता है, जो लोगों के सामने और उनके पीछे है, और लोग उसके ईल्म में से
किसी भी चीज़ का अहाता नहीं करते हैं, सिवा उतनी मिक्दार के जितनी वो
चाहता है. उसकी कुर्सी की वुसूअत आसमानों और जमीन को शामिल है, और
उनकी डिफ़ाजत उस पर भारी नहीं, वही बलंदी और अजमतवाला है.”

(सूर: बकरह, २:२५५)

(3) — قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ और قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ○ (कुल हु वल्लाहु अहद) और (कुल अउल्लु बि-रब्बि-ल इ-ल-क) और (कुल अउल्लु बि-रब्बिन्-नास) हर इज्ज नमाज के बाद पढ़ें. नीज तीनों सूरतों को सुबह के वक्त तीन-तीन भरतबा इज्ज की नमाज के बाद और रात को नमाजे मगरिब के बाद पढ़ें.

(4) — सूर: अकरह की आभरी दो आयतें रात को पढ़ें और वो ये है :

أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ كُلٌّ آمِنٌ بِاللَّهِ
 وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ ۗ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ ۗ وَقَالُوا
 سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٣٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ
 نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا
 تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ
 عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا ۗ
 وَاعْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٣٦﴾

आमनर्-रसूलु बिमा उन्जिल ँलयहि मिर्-रब्बिही वल् मुअ्मिनून,
 कुल्लुन् आमन बिल्लाहि व मला-ईकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही, व कालू
 समिअना व अतअना गुइरान-क रब्बना व ँलयकल् मसीर. ला युकल्लिहु-
 ल्लाहु नइसन् ँल्ला वुस्अहा, लहा मा कसअत् व अलयहा मकतसअत्, रब्बना
 ला तुआभिज्ना ँन्नसीना अव् अप्तअना, रब्बना व ला तह्मिल् अलयना
 ँस्रन् क-मा उमल्लाहू अलल्लजीन मिन् कबूलिना, रब्बना व-ला तुहम्मिल्ना
 मा-ला ता-क-त ल-ना बिह, वाअहु अत्रा, वग्-इरलना, वर-उम्ना, अन्त
 मवलाना इन्सुरना अलल् कव्मिल् काइरीन.

“रसूलुल्लाह ﷺ उस चीज पर ईमान ले आये, जो उनके रब की तरफ से

उन पर नाज़िल हुई, और मु'मिनीन भी, और उसके रसूलों पर (वो कहते हैं के) हम उसके रसूलों के दरमियान तफ़रीक नहीं करते और उन्हीं ने कहा के (अय अल्लाह!) हमने तेरा हुकूम सुना और ईताअत की, अय हमारे रब! हम तेरी मग़फ़िरत याहते हैं और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है. अल्लाह किसी आदमी को उसकी ताकत से ज़्यादा मुक़द्लफ़ नहीं करता, जो नेकी करेगा उसका अज्र उसे मिलेगा और जो गुनाह करेगा उसका ज़मियाज़ा उसे भुगतना पड़ेगा. अय हमारे रब! भूल-चूक और गलती पर हमारा मुवाज़ा न कर, अय हमारे रब! और हम पर ऐसा बोझ ना डाल जैसा के तूने मुझसे पेहले के लोगों पर डाला था, अय हमारे रब! ओर हम पर इस कदर बोझ ना डाल जिसकी हम में ताकत ना हो, और हमें दरगुज़र इरमा, और हमारी मग़फ़िरत इरमा और हम पर रहम इरमा, तू मेरा आका और मौला है, पस काफ़िरों की कौम पर हमें गल्बा नसीब इरमा.” (सूर: अक़रह, २:२८५-२८६)

क्यूं के सहीह हदीस में नबी करीम ﷺ से साबित है, आपने इरमाया :

“जिस शप्स ने रात को आयतुल कुर्सी पढ लिया उसके उपर अल्लाह की तरफ़ से अेक निगरां बराबर रहेगा, और शैतान उसके करीब नहीं आयेगा, यहाँ तक के सुब्ह हो जाये.”

नीज़ नबी करीम ﷺ से ये भी साबित है के आपने इरमाया :

“जो शप्स सूर: अक़रह की आखरी दो आयतें रात को पढ ले तो ये उसके लिये काफ़ी है.”

(५) — **أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.**

अउिउ बि-कलिमाति-ल्लाहि-ताम्माति मिन् शरि मा खलक

का विद् कसरत से करना याहिये, रात या दिन में किसी जगह पडाव डालते वक्त, प्वाह मकान हो या सेहरा, झिजा हो या समन्दर, हर जगह इसका विद् करना याहिये, क्यूं के आप ﷺ ने इरमाया :

مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا فَقَالَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ حَتَّى يَرْتَجِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذَلِكَ.

“जिस शप्स ने किसी मकाम पर पडाव डाला और कहा के — अउजु बि-
कलिमातिल्लाहि-ताम्माति भिन शरि मा भलक, लम् यजुरहु शयउन् यर्-तडिल
मिन् मन्-जिलहि जालिक.” (मैं अल्लाह त्आला के कलमाते ताम्मा के जरिये
उसकी मज्दूक के शर से पनाह मांगता हूं, तो उसे कोई चीज नुकसान नहीं पहुंचा
सकती, यहां तक के वो सहीह-सालिम उस मकाम से क्यू कर जाये.)

(६) — एन्हीं वजार्ह में से अक ये भी है के दिन के अव्वल वक्त ओर
रात के अव्वल वक्त में तीन मरतबा कहे :

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

बिस्मिल्लाहि-द्वजी ला यदुरु मअस्मिही शयउन् झील् अर्हि व-ला
झीस्माथ व-हुव-स्समीउल् अलीम

“शुर् करता हूं उस जात के नाम से, जिसके नाम के साथ जमीन व आसमान
की कोई चीज नुकसान नहीं पहुंचा सकती और वो सुननेवाला और जाननेवाला
है.”

मजकूरा जाला अजकार और मुअव्वजात जादू वगैरह के शर से भयने के
लिये अजीम अस्बाब हैं, उस शप्स के लिये जो सिद्क दिल से अल्लाह पर ईमान
व यकीन रभता हो और गुजिशता हुआओं और मुअव्वजात का ईशाराह सद्र
(दिल की गहराईयों से, दिल फोलकर एप्लास) के साथ पाबंद हों.

और यही मुअव्वजात व अजकार जादू लग जाने के बाद इसको जाईल
करने में भी अजीम हथियार हैं, साथ ही साथ इसके जरर को दफअ करने और

मुसीबत को दूर करने के लिये ब-कसरत अल्लाह त्आला से गिरया-व-जारी और सवाल करना चाहिये, ज़ादू वगैरह के असरात का इलाज करने के लिये नबी करीम ﷺ से साबितशुदा दुआओं (जिनके जरिये आप ﷺ अस्हाबे किराम को दम किया करते थे) में से बाज ये है :

اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، اذْهَبِ الْبَأْسَ، وَاشْفِ، أَنْتَ الشَّافِي، لَا
شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ، شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا.

अल्लाहुम्म रब्बनासि अज़्हिबिल् बाअ्स, वश्फि अन्तश्-शाफ़ी, ला शिफ़ाह इल्ला शिफ़ाउ-क, शिफ़ाअल्ला युगादिरु स-क-मा.

(अय अल्लाह ! लोगों के पालनहार ! इस मुसीबत को दूर कर दे और शिफ़ा अता कर, तू ही शिफ़ा अता करनेवाला है, तेरी शिफ़ा के इलावा और कोई शिफ़ा नहीं, अल्लाह ऐसी शिफ़ा अता कर जो कोई भीमारी बाकी ना रहे.)

जिन दुआओं को पढ़कर जिब्रिल عليه السلام ने नबी करीम ﷺ को दम किया था उनमें से एक ये है :

بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ، مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ
عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يَشْفِيكَ، بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ.

बिस्मिल्लाहि अरकी-क मिन् कुल्लि शयइय्यूअज़ी-क, मिन् शरि कुल्लि नफ़सिन् अव् अइनि हासिद, अल्लाहु यश्फ़ी-क, बिस्मिल्लाहि अरकी-क.

“अल्लाह के नाम से मैं आप को दम करता हूँ, हर उस चीज़ से जो आपको तकलीफ़ देती है, हर नफ़स और हर हासिद निगाह से, आप को अल्लाह शिफ़ा अता इरमाओं, अल्लाह के नाम से मैं आप को दम करता हूँ.”

इस दुआ को तीन मरतबा पढ़ना चाहिये.

ज़ादू का असर जाईल करने का एक इलाज ये भी है, जासकर मर्दों के लिये

के अगर उन्हें भीवी से जिमाअ करने में रुकावट महसूस होती हो, तो बेर के दरख के सरसब्ज सात पत्ते लेकर उसे पत्थर वगैरह से कूट डालें, फिर उसे किसी बर्तन में रखकर इतना पानी भर दें के गुस्ल करने के लिये काफ़ी हो जाये, फिर उस पर 'आयतुल कुर्सी' और قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ (कुल या अय्युहल काफ़िरून) और قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (कुल हुवल्लाहु अहद) और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (कुल अउल्लु बिरब्बिल इलक) और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (कुल अउल्लु बि-रब्बिनास) पढ़ें।
नीज सूर: आ'राफ़ की ये आयतें पढ़ें, जिनमें ज़हू का जिक्र है :

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٥﴾
فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٦﴾ فَغَلَبُوا هَنَالِكَ وَانْقَلَبُوا
طُغْرَيْنَ ﴿١١٧﴾

व अव्हयना इला मूसा अन् अलिक असा-क, इ-इजा हिय तलकहु मा यअफ़िकून. इ-व-कअल् उकहु व भ-त-ल मा कानू यअमलून. इ-गुलिबू हुनालि-क वन्-कलबू सागिरीन.

“और हमने मूसा को भ-जरिये वही कछा के अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दो, तो वो देखते ही देखते ज़हूगरो के जूट को निगल गइ, पस उक साबित हो गया और ज़हूगरो का अमल बेकार हो गया, युनांये वो सब वहां मगलूब हो गये और जिल्लत व रुस्वाइ का उन्हें सामना करना पडा.”

(सूर: आ'राफ़, ७:११८-११८)

फ़िर सूर: यूनुस की ये आयतें पढ़े :

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ
لَهُمْ مُوسَىٰ القُوا مَا أَنْتُمْ مُلقُونَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا ألقُوا قَالَ مُوسَىٰ مَا
جِئْتُمْ بِهِ ۗ السَّحَرُطُ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٠٤﴾

વ કાલ ફિરઅબ્નુઅ-તૂની બિ-કુલ્લિ સાહિરિન્ અલીમ. ફ-લમ્મા જા-અસ્-સહરતુ કાલ લહુમ્-મૂસા અલ્કૂ મા અન્તુમ્-મુલ્કૂન. ફ-લમ્મા અલ્કવ કાલ મૂસા મા જિઅતુમ્ બિહિસ્-સિહ્રુ, ઈન્નલ્લાહ સ-યુબ્તિલુહ, ઈન્નલ્લાહ લા યુસ્લિહુ અમલલ્ મુફ્સિદીન. વ યુહિક્કુ-લ્લાહુલ્ હક્ક બિ-કલિમાતિહી વ-લવ્ કરિહલ્ મુજરિમૂન.

“और फिरऔन ने कहा के मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को डालिरो करो. पस जब जादूगर आये, तो उनसे मूसा ने कहा के तुम्हें जो डालना है, डालो. पस जब उन्होंने (अपनी रस्सीयों और लाठीयों को) जमीन पर डाल दिया, तो मूसा عليه السلام ने कहा के तुमने जो अभी पेश किया है, जादू है. यकीनन अल्लाह इसे अभी बेअसर बना देगा. बेशक अल्लाह इसाद करनेवालों के अमल को कामियाब नहीं होने देता है, और अल्लाह अपने हुक्म से हक को साबित कर दिभाता है, याहे मुजरिमीन ऐसा ना याहते હોં.”

(સૂર: યૂનુસ, ૧૦:૭૯-૮૨)

ઈસકે બાદ સૂર: તા-હા કી યે આયતેં પઢે :

قَالُوا يُمُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۗ قَالَ بَلْ أَلْقَوَاءَ فَإِذَا جِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۗ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۗ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۗ وَالْقِيَامَ فِي يَمِينِكَ تَلْقَفُ مَا صَنَعُوا ۗ وَإِمَّا صَنَعُوا كَيْدُ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاجِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۗ

કાલૂ યા મૂસા ઈમ્મા અન્ તુલ્કિય વ ઈમ્મા અન્-નકૂન અવ્વલ મન્ અલ્કા. કાલ બલ્ અલ્કૂ, ફ-ઈજા હિબાલુહુમ્ વ ઈસિયુહુમ્ યખયલુ ઈલયહિ મિન્ સિહ્રિહિમ્ અશહા તસ્આ. ફ-અવ્જસ ફી નફ્સિહી ખીફતમ્-મૂસા. કુલ્ના લા તખફ ઈન્ન-ક અન્તલ્ અમ્લા. વ અલ્કિ મા ફી યમીનિ-ક તલ્કફ મા સનહી, ઈન્નમા સનહી કઈદુ સાહિર, વ લા યુફ્લિહુસ્-સાહિરરુ હઈસુ અતા.

“जहदूगरोने कडा के अय मूसा ! तो तुम पेहले अपनी लाठी जमीन पर डालो, या हम ही पेहले डालते हैं. मूसा ने कडा : बल्के तुम ही पेहले डालो. तो उनके जहदू के जेरे असर ऐसा दिभाई देने लगा के जैसे उनकी रस्सीयां और लाठीयां जमीन पर दोंड रही है, तो मूसा अपने दिल में भौंफ़ महसूस करने लगे. हमने कडा : आप डरिये नहीं, बेशक गा़लिब आप रहेंगे और आपके दायें हाथ में जो लाठी है उसे जमीन पर डाल दिजिये. वो उनके तमाम मुनादा सांपो को हडप जायेगी. एन्धों ने जो बनाया है वो अेक जहदूगर का मको-फ़रेब है, और जहदूगर जिधर से आये, कामियाब नहीं होगा.” (सूर: ता-हा, २०:६५-६८)

मजकुरा सुरतों और आयतें इस पानी पर पढने के बाद इसमें से थोडा सा पानी पी ले और बाकी पानी से गुस्ल कर ले, इससे एन्-शा अल्लाह जहदू का असर जाईल हो जायेगा. अगर दो-यंद भरतबा ये तरीका करने की जु़रत महसूस हो तो करें, कोई हर्ज नहीं, यहां तक के जहदू का असर जाईल हो जाये.

और सब से ज़्यादा नफ़ाबक्ष ईलाज जहदू का असर जाईल करने का ये है के वो जगह तलाश करनी चाहिये, जहां जहदू दफ़न है, जमीन हो या पहाड वगैरह, अगर जगह का पता लग जाये तो उसे निकालकर फ़ना कर दिया जाये, तो जहदू बेकार हो जायेगा.

ये हैं वो उमूर, जिनका बयान कर देना जु़ररी था, जिनसे जहदू के ખतरात से बचा जा सकता है और जिनसे जहदू का ईलाज किया जा सकता है. (वल्लाह वलल तौफ़ीक)

रहा जहदूगरो के अमल से जहदू का ईलाज करना, जो जभल या दूसरी कुरबानीयों के जरिये जिन्नातों से तकर्बुब पर मुश्तमिल होता है, तो ये जाईज नहीं, क्यूं के ये शैतानी अमल है, बल्के शिर्के अकबर में से है. विलाज़ा इससे दूर रहना जु़ररी है. नीज़ जहदू के ईलाज के लिये काहिनों, नजूमियों और मंतरवालों से सवाल करना और उनके ईरशादात पर अमल करना भी नाजाईज है, क्यूं के वो ईमान नहीं रखते, और इस लिये भी के वो जूटू और फ़ाजिर है, एल्मे-गैब

का दावा करते हैं, और अवामुन्नास को धोका देते हैं. नीज अल्लाह के रसूल ने उनके पास जाने से, उनसे सवाल करने और उनकी तस्दीक करने से मना इरमाया है, जैसा के इसका बयान किताबये के शुर् में गुजर युका है.

अल्लाह त्आला से हुआ है — मुसलमानों को हर मुसीबत से आइयत बक्षे, और उनके दीन की डिफ़ाजत करे और अल्लाह उन्हें दीन की समज अता इरमाये और हर उस अमल से दूर रभे जो उसकी शरीअत के मुखालिफ़ हो, और दइद व सलाम नाजिल हो उसके बंदे और उसके रसूल मुहम्मद ﷺ पर और उनके आल व अस्हाब पर.

वस्सलामु अलईकुम व-रहमतुल्लाह व-बरकतुह,

अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज



ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત કેટલાક પુસ્તકો

કચ્છન નં. ૧

શિરતુન્નબી કિવઝ

(સલાવાતુ અલ્લાહી ય સલામ)

સુન્નાતી + મહુ પસીલ અનુદીનિ કુલમતી
બકો પસી : ઈલ કલિલ કુલમતી
તીલા સેદીલ : મોહમ્મદ - ૨૨૧૪

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ઈસ્લામ ખાલિસ કયા હૈ ?

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

કચ્છન નં. ૧૧

દુઆએં

કચ્છ નં ૧૧ પૃથુકાલો

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

જિન, ખદુ, ઓર બિમારીઆ દૂર કરનેકા ઈલાહી

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

કચ્છન નં. ૨૬

અકાત ની મસાઈલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

દુઆ કે મસાઈલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

નબી કી નમાઝ

(સલાવાતુ અલ્લાહી ય સલામ)

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

લા ઈલા હ ઈલ્લાહ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

નમાઝ જમાઅત કે સાથે પઠ્ઠના ફર્ઝ હૈ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ખુશગવાર કિંદગી કે ઈસ્લામી ઉસૂલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

વસીલા

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મુખત્તાર તશ્દીર અલ્લામુલ વધાબાન સૂર: બકરહ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

નેક ઓરત

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

તોહફા-એ-રમઝાન

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

અહમ દીની અરબાક

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મીલાકુલબી અને મોઠમને રસુલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મુસલમાન કા અકીદા

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

રોઝા ની મસાઈલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

સ્ત્રીઓના વિશિષ્ટ મસાઈલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

દીન કે તીન અહમ ઉસૂલ

કોલ : મુહમ્મદ ઉકબાલ શીખાબી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ
કોલ ટુલી પો, ડોલ બજાર, ભૂજ - ૬૨૪૦
Mo : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in



ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ પાસે, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)
 મો. : +91 8401786172
 Blog : www.iickutch.blogspot.in